# DSSSB PRT, TGT & PGT

## Part(A+B)

## SCHOLAR BATCH

# हिन्दी

# प्रमुख उपन्यास और कवि

Part -2

LIVE 05-07-2024 09:00 AM

- 'प्रेमाश्रम'- 'प्रेमाश्रम' का प्रकाशन 1922 में हुआ था। इससे पहले यह उपन्यास ''गोशिए-आफियत' नाम से उर्दू में प्रकाशित किया गया था। इस उपन्यास का घटना स्थल बनारस से बारह मील दूर का 'लखनपुर' नामक गाँव है। ''प्रेमाश्रम'' में तीन पीढ़ी के जमींदारी व्यवस्था का चित्रण हुआ है। पहला लाला जयशंकर की पीढ़ी, दूसरा ज्ञानशंकर की पीढ़ी और तीसरा मायाशंकर की पीढ़ी के साथ-साथ किसानों के दयनीय जीवन और जमींदारों की क्रूरता का अंकन भी किया गया है।

**रंगभूमि (1925)** - रंगभूमि उपन्यास में औद्योगिकीकरण के दोष पूँजीवादियों की शोषण नीति अंग्रेजों के अत्याचार एवं भारतीय शिक्षितों की चरित्रहीनता का विश्लेषण चित्रण किया गया है।

पात्र-सूरदास, सोफिया

- **कायाकल्प 1926** - पुनर्जन्म की धारणा पर समाज-सेवा, राजा के अत्याचार विलास एवं सच्चे प्रेम का चित्रण किया गया है।

• **निर्मला (1927)** - मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित निर्मला उपन्यास प्रसिद्ध हिन्दी उपन्यास है। इस उपन्यास में दहेज प्रथा और अनमेल विवाह को आधार बनाकर लिखा गया है। इस उपन्यास

के मुख्य पात्र, मुंशी, तोताराम, मन्साराम, रुक्मिणी, जियाराम, सियाराम, भुङ्गि एवं महरी आदि हैं

• **कर्मभूमि (1932) -** कर्मभूमि प्रेमचन्द का राजनीतिक उपन्यास है, जो पहली बार (1932) में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में विभिन्न राजनीतिक समस्याओं को परिवारों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

पात्र-अमरकांत

• **गबन (1931)** - गबन प्रेमचन्द द्वारा रचित उपन्यास है। 'निर्मला' के बाद 'गबन' प्रेमचन्द का दूसरा यथार्थवादी उपन्यास है। गबन में एक विशेष चिन्ताकुल विषय से सम्बन्धित उपन्यास है। यह विषय है, गहनों के प्रति पत्नी के लगाव होने पति के जीवन पर पड़ता क्या प्रभाव। गबन में टूटते मूल्यों के अंधेरे में भटकते मध्यवर्ग का वास्तविक तथा मनोवृत्ति तथा पुलिस के चरित्र को प्रस्तुत किया गया है

इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने पहली बार नारी समस्या को व्यापक भारतीय परिप्रेक्ष्य में रखकर देखा है और उसे तत्कालीन भारतीय आंदोलन से जोड़कर देखा है। उपन्यास के मुख्य पात्र-जलपा, दीनदयाल, दयानार्थ आदि।

• **गोदान (1936)** - गोदान सन् 1936 में प्रकाशित प्रेमचन्द का कृषक समस्या पर आधारित महाकाव्यात्मक उपन्यास है और उनकी उपन्यास कला का चरमोत्कर्ष है। किसान का शोषण कितने मुहानों पर और किस प्रकार होता है इसका चित्रण 'गोदान' में होरी की कथा के माध्यम से किया गया है। जमींदार, पटवारी, कारकुन, महाजन, पुलिस, समाज एवं धर्म के ठेकेदार-सब किसान का शोषण करते हैं। गोदान के पात्र अपने-अपने वर्ग के प्रतिनिधि पात्र हैं। हर किसान की समस्याएँ कमोवेश वैसी ही हैं जैसी होरी की हैं। गोदन में दो कथाएँ साथ-साथ चलती है। एक ग्रामीण जीवन की कथा है, दो दूसरी नागरिक जीवन की कथा है। जमींदार रायसाहब अमरपालसिंह दोनों कथाओं के सेतु हैं। प्रेमचन्द ने किसान के शोषण के

साथ-साथ जमींदारों की फिजूल खर्ची पुलिस के अत्याचार, संयुक्त परिवार का विघटन, जाति प्रथा की विडम्बना एवं नारी सम्बन्धी विचारों पर भी व्यापक रूप से प्रकाश डाला है।

गोदान के प्रमुख पात्र है- होरी, धनिया, गोबर, रायसाहब, मेहता, मालती, गोविंदी, दातादीन, सिलिया, मातादीन, झुनिया, भोला आदि। होरी इस उपन्यास का नायक है और धनिया नायिका है।

- **मंगलसूत्र (1936)** - यह प्रेमचन्द जी का अधूरा उपन्यास है।

## विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक (1891-1945 ई.)

विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक के दो उपन्यास 'माँ' (1929 ई.) और 'भिखारिणी' (1929 ई.) प्रसिद्ध है। दोनों ही उपन्यासों में मानव-चरित्र की महिमा के घोतक तत्वों का और हृदय स्पर्शी वर्णन किया गया है।

**माँ (1929)-**उपन्यास में माता की महिमा का प्रतिपादन किया गया है। लेखक ने यह दिखाने की कोशिश की है कि माता के स्नेह, त्याग और विवेकपूर्ण देख-रेख पर ही बालक का विकास निर्भर है। उपन्यास के अन्त में दुश्चरित्र पात्रों के जीवन में सुधार लाकर और सच्चरित्र पात्रों को सुखी दिखाकर लेखक ने अपनी सुधारवादी दृष्टि का परिचय दिया है।

**भिखारिणी (1929)-** भिखारिणी उपन्यास में अन्तर्जातीय विवाह की समस्या को उठाया गया है और मानव मन के सहज आकर्षण तथा जातीय बंधन की कठोरता के मार्मिक द्वन्द्व को बड़ी सहजता से चित्रित किया गया है। लेखक जातीय बन्धन को तोड़ने का साहस नहीं दिखा सका है। उपन्यास की नायिका 'जस्सी' रामनाथ के प्रेम की स्मृति की सँजोये आजीवन भिखारिणी बनी रहती है।

## शिवपूजन सहाय (1893-1963 ई.)

'शिवपूजन सहाय' का एकमात्र उपन्यास 'देहाती दुनिया (1926 ई.) प्रसिद्ध है। इसमें सरल ग्रामीण जीवन का सुबोध और प्रभावकारी चित्रण किया गया है।

राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह (1890-1971 ई.)

राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह द्वारा लिखित उपन्यास हैं, राम रहीम (1936) पुरुष और नारी (1939 ई.) संस्कार (1942 ई.) और चुम्बन और चाँटा (1956 ई.) इनके उपन्यास इन उपन्यासों में जीवन के विभिन्न स्तरों के विविध पात्रों की झाँकी रोचक शैली में प्रस्तुत की गई है।

## सियाराम शरण गुप्त (1895-1963 ई.)

सियाराम शरण गुप्त का प्रथम उपन्यास 'गोद 1932' ई. में प्रकाशित हुआ था।, अन्तिम आकांक्षा (1934) और नारी (1937) इन तीनों उपन्यासों में गाँधी के अध्यात्मक पक्ष को महत्त्व दिया गया है।

**गोद 1932-** गोद उपन्यास में 'किशोरी' की व्यथा से शोभाराम का हृदय द्रवीभूत होता है। वह समाज के बन्धन तोड़कर उसे स्वीकार करता है।

**अन्तिम आकांक्षा (1934)-** अन्तिम आकांक्षा उपन्यास में 'रामलाल' जैसे साधारण व्यक्ति के हृदय की स्वच्छता दिखाई गई है। रामलाल समाज के अन्यायपूर्ण बन्धनों को सहकर अपनी मानवीय श्रेष्ठता का परिचय देता है।

• **नारी (1937)** 'नारी' उपन्यास में नारी की शक्ति का चित्रण किया है। नारी में 'जमुना' अपने पुत्र को सन्देश देती है- जितना अधिक सह सकेगा, उतना ही तू बड़ा होगा।

## प्रताप नारायण श्रीवास्तव

'प्रताप नारायण श्रीवास्तव के अनेक उपन्यास प्रकाशित हैं। इनका प्रथम उपन्यास 'विदा' (1927 ई.) प्रेमचन्द के जीवन काल में ही प्रकाशित हो गया था। इसके बाद विजय (1937 ई.) 'विकास' (दो भाग 1938 ई.) बयालीस' (1947 ई.) विसर्जन (1949 ई.) बेकसी का मजार (1957 ई.) विषमुखी (1958 ई.) वेदन (1959 ई.) वन्दना (1961 ई.) वञ्चना विनाश के बादल (1963), विपथगा (1964), बन्धन वञ्चना (1964 ई.) व्यावर्तन (1964 ई.) वन्दिता विश्वास की वेदी पर, विहान आदि। इनके उपन्यासों में मुख्य रूप से सामाजिक जीवन के विविध पक्षों और समस्याओं को आधार बनाकर रोचक कथा सूत्रों के सहारे उपन्यासों की सृष्टि हुई है।

## श्री अमृत लाल नागर

**अमृत लाल नागर द्वारा लिखित उपन्यास है-**

- **महाकाल (1946)**- इस उपन्यास में बंगाल अकाल की त्रासदी का चित्रण किया गया है। उपन्यास के मुख्य पात्र, 'मास्टर पॉचू' गोपाल, दयालचन्द आदि।
- **बूँद और समुद्र (1956 ई.)** - लखनऊ के चौक के रूप में भारत की विभिन्न छवि का चित्रण किया गया है।
- **मोहरे (1959 ई.)**- इस उपन्यास में मानवतावादी दृष्टिकोण को विस्मृत नहीं किया गया है। जबकि अवध के नवाब की हास कालीन स्थिति का सजीव अंकन करते हुए वे नवाब को पूरी सहानुभूति देते हैं। उन्होंने उसकी विवशता, उसके अन्तर्मन का द्वन्द्व उसकी निरवलम्बता का पूरी सहानुभूति के साथ चित्रण किया है।

**सुहाग के नूपुर (1960)**- मध्यकालीन कुलवुधओं एवं नाहर वधुओं का चित्रण किया गया है। उपन्यास के अन्त में वेश्या 'माधवी' कहती है-

"सारा इतिहास सच-सच ही लिखा है देव। केवल एक बात अपने महाकाव्य में और जोड़ दीजिए- पुरुष जाति के स्वार्थ और दम्भभरी मूर्खता से ही सारे पापों का उदय होता है। उसके स्वार्थ के कारण ही उसकी अर्धांग-नारी-जाति-पीड़ित है। एकांगी दृष्टिकोण से सोचने के कारण ही पुरुष न तो स्त्री को 'सती' बनाकर दी सुखी कर सका न वेश्या' बनाकर ही। इसी कारण वह स्वयं ही झकोले खाता है और खाता रहेगा। नारी के रूप में न्याय रो रहा है महाकवि। उसके आँसुओं में अग्नि-प्रलय भी समाई है और जल-प्रलय भी।"

## विष्णु प्रभाकर (1912-2009 ई.)

विष्णु प्रभाकर ने नाटककार, कहानी-लेखक और जीवनीकार के रूप में अधिक ख्याति पाई है, किन्तु वे एक मानवतावदी उपन्यास लेखक भी हैं। इनके द्वारा लिखित उपन्यास हैं-

**निशिकान्त (1955 ई.)** - इस उपन्यास में 1920 ई. से 1936 ई. तक की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण किया गया है।

- **तट के बन्धन (1955 ई.)** - प्रेम व विवाह एवं नारी मुक्ति का चित्रण किया गया है।

- **स्वप्नमयी (1956 ई.)** - स्त्री के काल्पनिक, तर्कातीत एवं स्वप्नजीवी चरित्र का अंकन
- **कोई तो- (1980)** 'कोई तो' उपन्यास में सड़े गले नैतिक मूल्यों, जंड़ मान्यताओं एवं जीवन के विविध क्षेत्रों में लक्षित मानव मूल्यों के पतन पर तीखा प्रहार किया गया है।
- **अर्द्धनारीश्वर - (1992 ई.)** में अपने समाज के लगभग सभी वर्गों की स्त्रियों को सामने रखकर बलात्कार-सहित उनकी सभी प्रकार की यातनाओं पर गहरी आत्मीयता के साथ विचार मंथन किया है।
- **संकल्प - (1993)** परित्यक्ता स्त्री की मनोभावों का अंकन।

## पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एक ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं।

**बाणभट्ट की आत्मकथा (1946)** प्रेम का उदात्तीकरण एवं हर्ष-कालीन सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का चित्रण किया गया है। प्रमुख पात्र बाणभट्ट, निपुणिका, निउनिया, सम्राट तुवरमिलिंद, भट्टिनी आदि।

**चारुचन्द्र लेख - (1963)**-12वीं-13वीं शती के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक स्थिति का चित्रण किया गया है। मुख्य पात्र-जयत्रिचन्द, चन्द्रप्रभा, मैना, गोपाल आर्यक आदि।

**पुनर्नवा - (1973)** वर्ण व्यवस्था एवं नारी शोषण का चित्रण किया है।

**अनामदास का पोथा- (1976)** औपनिषदिक युग के परिवेश एवं जीवन पद्धति का चित्रण किया है।

## वृन्दावन लाल वर्मा (1889-1969)

वृन्दावन लाल वर्मा हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार तथा उपन्यासकार थे। हिन्दी उपन्यास के विकास में उनका योगदान महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने एक तरफ प्रेमचन्द की सामाजिक परम्परा को आगे बढ़ाया है, तो दूसरी तरफ हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यास की धारा को उत्कर्ष तक पहुँचाया है। इतिहास, कला, पुरातत्व, मनोविज्ञान, मूर्तिकला और चित्रकला में भी इनकी विशेष रुचि रही।

वृन्दावन लाल वर्मा को हिन्दी में 'सरवाल्टर स्काट' की उपाधि दी जाती है। इनके प्रारम्भिक उपन्यास; संग्राम (1927) प्रत्यागत 1927 लगन (1928) कुण्डलीचक, प्रेम की भेद आदि। ये उपन्यास सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति करते हैं।

## भगवती चरण वर्मा (1903)

भगवती चरण वर्मा का प्रथम उपन्यास 'पतन' 1927 ई. में प्रकाशित हुआ था। इनके अन्य उपन्यास हैं-

चित्रलेखा (1934) - चित्रलेखा उपन्यास पर फ्रेंच उपन्यासकार अनातोले के उपन्यास का छाया प्रभाव है। इस उपन्यास में पाप और पुण्य के चिरन्तन नैतिक प्रश्न को ऐतिहासिक परिवेश में प्रस्तुत किया गया है। लेखक का समाधान आधुनिक व्यक्तिवादी चिन्तन का परिणाम है।

- टेढ़े-मेढ़े रास्ते (1946) - इस उपन्यास में एक ही परिवार के तीनों बेटों का चित्रण किया है, जो गाँधीवादी, आंतकवाद, साम्यवाद को अपनाते हैं। इसमें दयानाथ, प्रभानाथ, उदायनाथ है तथा बाप रमानाथ है। इस उपन्यास पर राहुल सांकृत्यायन के उपन्यास 'सीधे-सादे' की कमजोरियों को उजागर किया है।

**अपने खिलौने (1957)** - इस उपन्यास में दिल्ली की मॉर्डन सोसाइटी के खखोखलेपन का चित्रण किया गया है।

- **भूले बिसरे चित्र (1959)** - एक मध्य वर्गीय परिवार की चार पीढ़ियों का चित्रण किया है। साथ ही इस उपन्यास. में उन्होंने 1880 से लेकर 1930 तक भारतीय जीवन के बदलते परिवेश का रेखांकन किया है। इस उपन्यास में राजनैतिक व्यवस्था पूँजी व्यवस्था सामन्तवादी व्यवस्था का भी चित्रण किया गया है। इस उपन्यास के मुख्य पात्र; शिवपाल, ज्वाल प्रसाद, ग्या प्रसाद आदि।
- **आखिरी दांव (1950)** - एक जुआरी की असफल प्रेम कथा का चित्रण है। मुख्य पात्र; रामेश्वर जुआरी, चमेली, रतून आदि।

- **वह नहीं आई (1960)** - इस उपन्यास में यह दिखाने की चेष्टा 'की है कि आधुनिक जीवन की विशेषताओं के बीच मानव की गहन जिजीविषा विद्यामन है। मुख्य पात्र श्यामला और शहबाज है।

- **सामर्थ्य और सीमा (1962)** - इस उपन्यास में प्र कृति के सामने मनुष्य के असहायता का चित्रण किया गया है।
- **सीधी-सच्ची बात (1968)** - 1938-1948 तक की भारतीय इतिहास को उपन्यास के रूप में चित्रित किया गया है तथा उपन्यास' का स्वर निराशावादी है।

## उपेन्द्रनाथ अश्क (1911)

(1911) इनके कई उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। इनके द्वारा लिखित उपन्यास है-

### सितारों का खेल (1940)

इस उपन्यास में नियति को अधिक महत्त्व दिया गया है। लता का प्रेमी बंसीलाल एक दिन तिरस्कृत होकर मकान तीसरी मंजिल से नीचे कूद जाता है। वह विकलांग होकर अस्पताल में भर्ती होता है। इस घटना से प्रभावित होकर 'लता उसके प्रति आकृष्ट होती है। बंसीलाल के प्राण तो बच जाते हैं, किन्तु वह जीवित माँस-पिण्ड मात्र रह जाता है। धीरे-धीरे 'लता' का नशा कम होता है। वह उससे ऊबने लगती है। इसी समय उसके जीवन में डॉ. अमृतराय से उसका गठबंधन नहीं हो पाता है। वह डॉ. अमृतराय से अनुरोध करती है कि वे बंसीलाल की बहिन राजरानी से विवाह कर लें। यह उपन्यास 'सती अनसुइया' के प्राचीन आदर्श की व्यर्थता सिद्ध करने के लिए लिखा गया है।

• **गर्म राख (1952 ई.)** - 'अश्क' जी का दूसरा प्रसिद्ध उपन्यास है। इसके भी सभी पात्र निम्न मध्यवर्ग के हैं। कथा नायिका 'सत्या' एक पाठशाला में अध्यापिका है। 'संस्कृति समाज' में उसकी भेट जगमोहन से होती है। वह जगमोहन से प्रेम करने लगती है। किन्तु जगमोहन 'दूरो' नाम की एक अन्य लड़की से प्रेम करता है। दूरो हरीश से प्रेम करती है। हरीश प्रगतिशील विचारों का युवक है। इस उपन्यास में भी मध्यवर्गीय जीवन की कुण्ठा ही व्यक्त की गई है। विशेष रूप से यौन-कुण्ठा।

• **बड़ी-बड़ी आँखे (1955 ई.)**- यह एक प्रतीकात्मक उपन्यास है। इस उपन्यास की सारी घटनाएँ देवनगर में घटित होती हैं। 'देवनगर' भारत देश का प्रतीक है। देवाजी, देवनगर की सारी घटनाओं के संचालक है। उनकी व्यवस्था कांग्रेस के स्वप्नशील प्रधानमन्त्री प. नेहरू की व्यवस्था का प्रतीक है। लेखक का व्यंग्य स्पष्ट है। वह कहना चाहता है कि चाटुकार, स्वार्थी, भ्रष्ट और अवसरवादी लोगों को लेकर उदार आदर्शवादी व्यवस्थापक भी देश को आगे नहीं बढ़ा सकते।

• **पत्थर अल पत्थर (1957)** - 'अश्क' जी का यह एक लघु उपन्यास है। इस उपन्यास में कश्मीर के मजदूरों की विवशता और व्यथा मूर्त की गई है। मुख्य पात्र 'हसनदीन घोड़े वाले' है।

• **शहर में क्षमता आइना (1963 ई.)**- 'अश्क' जी का यह एक वृहत् उपन्यास है। यह उपन्यास 'गिरती दीवारें" के बाद की कथा कहीं गई है। इस उपन्यास में बेमेल विवाह का चित्रण है। मुख्य पात्र-चेतन और नीला है। इस उपन्यास में एक ही दिन की कथा कही गई है। पूरा उपन्यास चेतन के स्मृति-चित्रों से भरा है। कथा तथ्य परक और ऊब पैदा करने वाली है।